بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक21.07.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

जलसा सालाना बर्तानिया का आगमन और जलसे के कार्यकर्ताओं तथा मेहमानों को स्वर्ण उपदेश

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जलसा सालाना यू.के. इन्शाअल्लाह तआला अगले जुम्अः से शुरु हो रहा है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसे में शामिल होने के लिए दूसरे देशों से मेहमानों का आगमन आरम्भ हो चुका है और जैसे जैसे जलसे के दिन निकट आते जाएँगे, निकट और दूर के देशों से मेहमानों की आमद में वृद्धि होती चली जाएगी। इसी प्रकार बर्तानिया के अन्य नगरों से भी मेहमान आने शुरु हो जाएँगे। जलसे के अतिथियों में अहमदियों के अतिरिक्त जो जलसे की बरकतों से लाभान्वित होने के लिए यहाँ आते हैं, कई अन्य देशों से ग़ैर अज़-जमाअत और ग़ैर मुस्लिम मेहमान भी पधारते हैं जिनमें कुछ देशों से सरकारी प्रतिनिधि अथवा सरकारी अफ़सर और पढ़ा लिखा वर्ग जो समृद्ध लोग होते हैं वे शामिल होते हैं। इसी प्रकार प्रैस और मीडिया से सम्बंध रखने वाले लोगों की संख्या में भी अब वृद्धि होनी शुरु हो गई है और ये सब आने वाले बड़ी गहरी दृष्टि से हमारी हर चीज़ को देखते हैं तथा साधारणतः प्रभावित होते हैं और विशेष रूप से जब हमारे निज़ाम (प्रबन्ध) को देखते हैं जो पूरा स्वयं सेवा पर आधारित व्यवस्था है तो यह चीज़ भी तबलीग़ के रास्ते खोलती है, और अधिक परिचय होता है, और अधिक अहमदियत के विषय में जानने का प्रयास करते हैं। अतः इन दिनों में हमारे काम करने वाले वालिंटियर्स (स्वयं सेवी) पुरुष, महिलाएँ, लड़के और लड़कियाँ, बच्चे, एक प्रकार की ख़ामोश तबलीग़ कर रहे होते हैं तथा प्रैस के माध्यम से अहमदियत का परिचय विश्व में चारों ओर विस्तृत रूप में फैलता है। अब प्रैस का ध्यान सामान्य दिनों में भी कई बार कई घटनाओं के कारण जमाअत की ओर हो रहा है। उदाहरणतः यहाँ यूरोप में कुछ आतंकी घटनाओं के पश्चात जमाअत के लोगों ने जिनमें महिलाएँ भी शामिल थीं, पुरुष भी शामिल थे, उन्होंने इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम लोगों को देने का प्रयास किया। इन घटनाओं के बाद हमारे प्रैस के विभाग ने भी बड़ी अच्छी भूमिका निभाई। जमाअत को इस्लाम की शांति प्रिय शिक्षा के संदर्भ में विश्व प्रैस ने दुनिया में विस्तृत स्तर पर परिचित कराया है। जैसे जैसे ये घटनाएँ बढ़ रही हैं जमाअत का परिचय भी अधिक बढ़ रहा है। तो इस प्रकार जलसे के दिनों में भी अल्लाह तआला इस माध्यम से इस्लाम का परिचय कराने के बड़े सामान उपलब्ध फ़रमा रहा है। जलसे के प्रोग्रामों, भाषणों इत्यादि के द्वारा जहाँ अहमदी रूहानियत में प्रगति करने का प्रयास करते हैं वहाँ ग़ैर अज़-जमाअत मेहमान और प्रैस ज्ञान एवं आस्था वर्धक शिक्षा को

सुनने के साथ साथ सामान्य रूप से जलसे के वातावरण और अहमदी पुरुषों और महिलाओं की स्वयं सेवा तथा आतिथ्य की भावना से उन्हें काम करता हुआ देखकर इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का व्यवहारिक दृश्य भी देख लेते हैं और जैसा कि मैंने कहा कि यह एक बहुत बड़ा तबलीग़ का साधन है। अतः स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी भूमिका है और कार्यकर्ता जहाँ और जिस अवस्था में भी काम कर रहे हैं, उनका अपना एक महत्त्व है तथा इस महत्त्व को एक सामान्य कार्यकर्ता से लेकर अफ़सर तक प्रत्येक को अपने सामने रखना चाहिए। एक सामान्य कार्यकर्ता चाहे वह छोटा सा पानी पिलाने वाला बच्चा ही हो उसका व्यवहार और बड़ी लगन के साथ निःस्वार्थ होकर कार्य करना जहाँ उसे अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला बना रहा होता है वहाँ ग़ैरों को भी प्रभावित कर रहा होता है जिसको जलसे में शामिल होने वाले मेहमान अभिव्यक्त भी करते हैं। इसी प्रकार सहयोगियों के अतिरिक्त अधिकारियों को भी याद रखना चाहिए कि केवल अपने कार्यकर्ताओं तथा सहयोगियों को ही सेवा करने वाला समझ कर उनसे काम न लें अपितु स्वयं भी विनम्रता पूर्वक एक सहयोगी तथा एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में काम करने का प्रयास करें। अपने कार्यकर्ताओं से तथा अन्य लोगों से भी, मेहमानों के साथ भी अपने व्यवहार नर्म और सहयोग करने वाले बनाए रखें। चेहरे पर कृतज्ञता और विनम्रता के भाव बने रहें, भाषा में नम्रता एवं शिष्टाचार के उत्तम व्यवहार के स्तर क़ायम हो रहे हों। सदैव याद रखना चाहिए कि मेहमान नवाज़ी एक महत्त्व पूर्ण विभाग है और मेहमान नवाज़ी केवल खाना खिलाना और पानी पिलाना अथवा अधिक से अधिक विश्राम की व्यवस्था कर देना ही नहीं है अपितु जलसा सालाना का प्रत्येक विभाग ही मेहमान की आवभगत है चाहे उसे कोई भी नाम दिया गया हो। जलसे पर जो भी आता है वह अतिथि है और उसकी आवश्यकताओं का अपने सामर्थ्यानुसार ध्यान रखना हर उस व्यक्ति के लिए अनिवार्य है जो किसी भी ड्यूटी पर नियुक्त है। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी भावनाओं को एक स्थान पर व्यक्त किया है जो हमारे लिए मूल रूप से कार्य पद्धति है। आप अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि मेरा सदैव ध्यान रहता है कि किसी अतिथि को कठिनाई न हो बल्कि इसके लिए सदैव सचेत करता रहता हूँ कि जहाँ तक हो सके मेहमानों को आराम दिया जावे। फ़रमाया कि मेहमान का दिल दर्पण के समान कोमल होता है और तनिक सी ठेस लगने से टूट जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः इस बात को हमें याद रखना चाहिए और अपने मन पर नियन्त्रण करके भी हमें मेहमान को आराम और सुविधा पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए और प्रत्येक विभाग के अधिकारियों से मैं कहूँगा कि यदि उनका व्यवहार विनम्र है, उनके आचरण अच्छे हैं, उनमें संतोष है, उनमें उचित बात सुनने का साहस भी बढ़ा हुआ है तो उनके नायब और सहयोगी भी ऐसे ही व्यवहार मेहमानों के साथ दिखाएँगे तथा आतिथ्य के सुन्दर नमूने दिखाएँगे। किन्तु यदि अधिकारियों के मुख पर कठोरता, बातों में कटुता और बात को ध्यान पूर्वक न सुनने तथा सहन न करने की आदत है तो उनके नायब भी और सहयोगी भी वैसे ही व्यवहार दिखाने वाले होंगे। अतः मेहमान की आवभगत के उच्च स्तर स्थापित करने के लिए प्रत्येक विभाग के अफ़सर अपनी स्थिति का आंकलन करते रहें तथा विनम्रता और विनयता को चरम सीमा तक पहुंचाने का प्रयास करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- विश्राम गृह की व्यवस्था करने वालों को याद रखना चाहिए कि सामूहिक विश्राम गृहों में भी और तम्बुओं में भी महिलाओं और बच्चों आदि का विशेष रूप से ध्यान रखें। निःसन्देह आजकल गर्मियों के दिन हैं लेकिन रात को मौसम एक दम ठण्डा भी हो जाता है और हदीक़तुल मेहदी में, जहाँ जलसा होना है इन्शाअल्लाह तआला, लंदन की तुलना में वैसे भी चार पाँच डिग्री temperature कम रहता

है। इस लिए जो लोग अपने सोने का प्रबन्ध करके आते हैं उन्हें इस बात को सामने रखना चाहिए कि भली प्रकार अच्छा प्रबन्ध हो रात के बिस्तरों का। पिछले वर्ष का अनुभव यही है कि बच्चों वाले कई बार मौसम ठण्डा होने के कारण रात को परेशान होते रहते हैं। इसी प्रकार खाना खिलाने वाले हैं जिनका सीधे मेहमानों से सम्पर्क है उन्हें मैं सदैव याद दिलाता हूँ कि खाना देते हुए, प्लेट में डालते हुए मेहमान की पसन्द को भी देख लिया करें यद्यपि इसमें बड़ी दुविधा और कठिनाई होती है लेकिन यथासम्भव प्रयास करें, जिस हद तक देख सकते हैं देखें और यदि कोई मजबूरी हो तो फिर सुन्दर रंग में जवाब दे दें।

फिर ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था भी एक बड़ी महत्त्व पूर्ण व्यवस्था है और अबकी बार पार्किंग दूर होने के कारण अधिकतर शटल बसों का प्रबन्ध किया गया है ताकि लोग निश्चित समय पर जलसे में पहुंच सकें और कारों के द्वारा आने वाले मेहमानों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके पार्किंग अधिक दूरी पर हो सकती है इस लिए उचित समय को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा करें। इसी प्रकार अन्य विभाग हैं प्रत्येक को अपने अपने काम के तरीक़ों तथा अपने कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण मेहमानों को अधिक से अधिक सुविधा देने की सोच के साथ करना चाहिए। समाज सेवा और सुरक्षा कर्मियों को भी पहले से अधिक सावधान होकर काम करना होगा। जो दुनिया के आजकल के हालात हैं, साथ ही मेहमानों के आदर सम्मान और भावनाओं का ध्यान रखते हुए ये सारा काम करना है। कार्ड चैक करने तथा अन्य चैकिंग स्कैनिंग इत्यादि में पहले दिन से लेकर अन्तिम दिन तक पूरा ध्यान देना होगा और प्रत्येक बार यदि कोई व्यक्ति बाहर जाता है तो वापस अन्दर आने पर उसको चैक करना होगा परन्तु यह भी ध्यान रखना है कि उनको किसी प्रकार का आभास न हो कि केवल उन्हीं पर नज़र है अथवा कोई अनुचित व्यवहार किया जा रहा है। जलसा सालाना पर शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मेहमान है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अतिथि होने के कारण हमने प्रत्येक मेहमान को विशेष अतिथि समझना है तथा उसके आतिथ्य का भरपूर प्रयास करना है। प्रत्येक विभाग के अफ़सरों को भी चाहिए कि अपने विभाग से सम्बंधित कमियों को देखने के लिए कुछ लोगों की ड्यूटियाँ लगा दें जो अपने विभागों के कामों की कमी बेशी का निरीक्षण करके शाम को अपने अफ़सरों को रिपोर्ट दें इसके द्वारा जलसे के समय भी तथा अगले वर्ष के जलसे में भी सुधार पैदा करने में सहायता मिलेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर फ़रमाया था कि लंगर के मोहतमिम को मेहमानों की आवश्यकताओं का निरीक्षण करते रहना चाहिए लेकिन क्यूँकि वह अकेला आदमी है इस लिए कई बार चूक हो जाती है, कुछ बातों नज़रों से ओझल हो जाती हैं इस लिए दूसरा व्यक्ति याद दिला दे और याद दिलाने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि अफ़सर स्वयं किसी को याद दिलाने के लिए नियुक्त करें जो निरीक्षण करता रहे कि कहाँ कहाँ कमी है। धनवान और निर्धन की समान रूप से मेहमान नवाज़ी होनी चाहिए। एक अवसर पर फ़रमाया कि जो नए अपरिचित व्यक्ति हैं अर्थात आने वाले मेहमान जो पूरी जानकारी नहीं रखते, यहाँ भी कई नए मेहमान दूसरे देशों से आते हैं, तो फ़रमाया कि यह हमारा कर्त्तव्य है कि उनकी प्रत्येक आवश्यकता को सम्मुख रखें। फ़रमाया कि कई बार किसी को शौचालय का भी पता नहीं होता तो उसे बड़ी कठिनाई होती है इस लिए आवश्यक है कि अतिथि की आवश्यकता का पूरा ध्यान रखा जाए। आपने फ़रमाया कि जिन लोगों को ऐसे कामों के लिए नियुक्त किया है, यह उनका कर्त्तव्य है कि किसी प्रकार की शिकायत न होने दें क्यूँकि लोग सैंकड़ों और हज़ारों मील की यात्रा करके श्रद्धा और निष्ठा के साथ सत्य की खोज के लिए आते हैं।

फिर एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरे नियम के अनुसार यदि कोई

मेहमान आवे और बुरा भला कहने तक भी बात पहुंच जावे तो उसे सहन करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेहमान की आवभगत के स्तर का वर्णन करने वाले ने एक घटना लिखी है कि आला हज़रत हज़रत हुज्जतुल्लाह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों की आवभगत का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भांति उत्तम और जीवित उदाहरण हैं जिन लोगों को अधिक समय तक आपकी संगत में रहने का अवसर मिला वे ख़ूब जानते हैं कि किसी मेहमान को चाहे वह सिलसिले में शामिल हो कि न हो, अर्थात अहमदी है या नहीं है, तनिक सी भी कठिनाई हुज़ूर को बेचैन कर देती है कि निष्ठावान दोस्तों के लिए तो और भी आपकी रूह में जोश और प्रेम होता है। इस प्रकार यह जोश और प्रेम हमें जलसे पर आने वाले मेहमानों के लिए अधिक से अधिक दिखाना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेहमान के महत्त्व और सम्मान के विषय में हमें क्या इरशाद फ़रमाया है इस बारे में एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह और आख़रत के दिन पर ईमान के लिए तीन बातों का करना अनिवार्य है। यह कि अच्छी बात कहो अथवा चुप रहो, अपने पड़ौसी का आदर करो और तीसरे यह कि अपने मेहमान का सत्कार करो। अतः मेहमान का सम्मान भी अल्लाह और आख़रत के दिन पर ईमान की शर्तों में से एक शर्त है। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत सी शर्तें हैं अथवा एक मोमिन के ईमान के उच्च स्तर के लिए हम कह सकते हैं कि मेहमान नवाज़ी भी एक शर्त है।

मेहमान की आवभगत के अंतर्गत यह भी बता दूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेहमानों के दीन के स्तर और मानसिकता का भी ध्यान रखते थे। अतः एक रिवायत में आता है कि आपने आने वाले मेहमानों को खाना इत्यादि खिलाने के बाद उनकी इच्छानुसार उनको मस्जिद में सोने के लिए भेज दिया और फिर सुबह फज्र की नमाज़ के लिए सबको जगाया। तो जलसे में जो तर्बियत का विभाग है वह भी इसी लिए स्थापित किया गया है कि मेहमानों को नमाज़ के लिए भी ध्यान दिलाते रहें तथा फज्र और तहज्जुद के लिए जगाएँ लेकिन विनयता एंव विनम्रता पूर्वक। इस प्रकार ये कुछ बातें थीं जो मेहमानों के हवाले से मैंने कहीं, अल्लाह तआला सब कार्यकर्ताओं को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सुन्दर रंग में सेवा करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में सैय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दो मरहूमों का जनाज़ा ग़ायब पढ़ने की घोषणा फ़रमाई। पहला जनाज़ा मुकर्रम सय्यद मुहम्मद अहमद साहब पुत्र हज़रत डा. मीर मुहम्मद इसमाईल साहब रज़ीअल्लाहु अन्हु का है जो 13 जौलाई को लगभग 92 वर्ष की आयु में लाहौर में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। दूसरा जनाज़ा मुकर्रमः महमूदा बेगम साहिबा अहलियः चौधरी मुहम्मद सिद्दीक़ साहब भट्टी का है। यह मुकर्रम असग़र अली भट्टी साहब मुबल्लिग़ सिलसिला नाईजेरिया की माता जी थीं। 16 जौलाई को 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

TOLL FREE NO: 180030102131